

है। जब जब आप यह कहते हैं कि छोटा किसान और बड़ा किसान तो मैं समझता हूँ कि किसान किसान में आप फर्क करते हैं और उनमें आपस में फर्क पैदा करने की कोशिश की जाये तो वह अच्छी बात नहीं है। अगर किसान किसान में, सबदूर सबदूर में फर्क करने की कोशिश की जाय तो जो मतलब है वह हल नहीं होगा इस तरह की गैर जिम्मेदारी की बात नहीं होनी चाहिये। देश में जरूरत इस बात की है कि अधिकतर की प्रोडक्शन खास तौर से बढ़े और जब तक ऐसा नहीं होना हमारे देश की इकोनॉमी ठीक नहीं हो सकेगी, उसके ऊपर हम कंट्रोल नहीं कर पाएंगे।

17.49 hrs.

WELCOME TO EGYPTIAN PARLIAMENTARY DELEGATION

MR. SPEAKER: Mr. Singh, I am sorry to interrupt you. I just wanted to avail of this opportunity to welcome in this House the presence of the Egyptian Parliamentary Delegation led by the distinguished Deputy Speaker, H. E. Dr. Gamel Otefy who is so well known to us all. I assure them that we two nations and we two people have great pride in our friendship with each other.

They are very very welcome here. Our only regret is that they are only staying here for one night. They are on their way to Bangladesh. I very much wish on behalf of Parliament that they could have stayed longer. If they cannot stay now, they can on their way back stay here for some time and see more of the country, more of Delhi and more of the people. Hon. Members, on your behalf, I welcome them all most heartily.

I must apologise that because this is the fag-end of the week and the fag-end of the sitting only a few minutes more are left many members have left now. But we are very happy that a few of us are present here to welcome them.

RESOLUTION RE POLICY IN RESPECT OF PRICES AND AGRICULTURAL PRODUCTION—Contd.

श्री शिवनाथ सिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन कर रहा था कि प्राइसिज को कंट्रोल करना हमारा उद्देश्य होना चाहिए— और वह हमारा उद्देश्य है भी, और हम उसके लिए प्रयत्न भी करते हैं। लेकिन आज हमारे देश में एक बड़ी एनामेसी यह है कि जहाँ इण्डस्ट्री की प्राइस को तय करने का अधिकार इण्डस्ट्रियलिस्ट्स को है, वहाँ एग्रोकल्चर की प्राइस को तय करने का अधिकार एग्रोकल्चरिस्ट्स को नहीं है, बल्कि उनको कोई दूसरा ही तय करता है। हमें अपने देश में ऐसी परिस्थिति पैदा करनी पड़ेगी, जिसमें किसान अपनी पैदावार की कीमत खुद तय करने की स्थिति में हों जायें। ऐसा करने पर ही हम वास्तविक धर्चों में प्रोग्रेस कर सकते हैं।

आज किसान बड़ी मेहनत करके, और फर्टलाइजर आदि बहुत कीमती सामानों का उपयोग करके, पैदा करता है, लेकिन जब उसकी प्राइस माकट में जाती है, तो मार्केट डाउन चली जाती है, और किसान की अपनी मेहनत का फल नहीं मिल पाता है। लेकिन जब किसान की पैदावार ब्यापारी के पास पहुंच जाती है, तो दो महीने के बाद उसकी प्राइस ऊंची हो जाती है। आवश्यकता इस बात की है कि प्राइसिज में यह जो फूलन-गुएशन होता है, उस की कंट्रोल किया जाये। इस का सीधा उपाय यह है कि हम किसान को उस की प्राइस को रीम्युनेटिव प्राइस एशोर्ड कर दें : किसान जो कुछ पैदा करे, हम उसकी रीम्युनेटिव प्राइस फिक्स कर दें और सरकार उसी प्राइस पर उस को खरीवे। इसके साथ ही मिडिलमैन को हटा दिया जाय। इससे एक तो कनज्यूमर को अधिक प्राइस नहीं देनी पड़ेगी, और दूसरे, किसान को भी